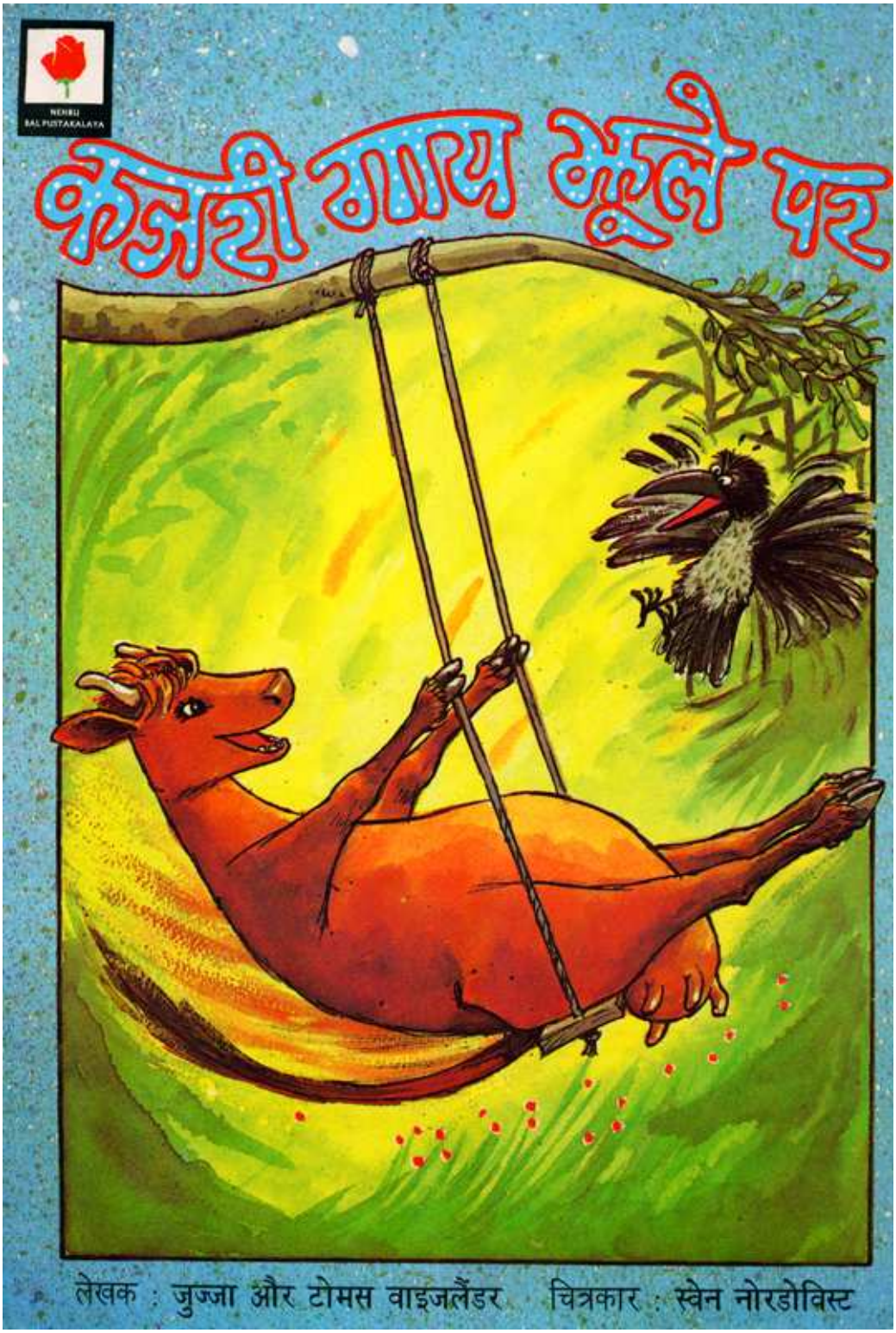

कजरी गाय झूले पर

लेखक : जुज्जा और टोमस वाइजलैंडर   चित्रकार : स्वेन नोरडोविस्ट

नेहरू बाल पुस्तकालय

कजरी गाय झूले पर

लेखक
जुज्जा और टोमस वाइजलैंडर

चित्रकार
स्वेन नोरडोक्विस्ट

अनुवाद
अरविन्द गुप्ता

एकं सूत्रे सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

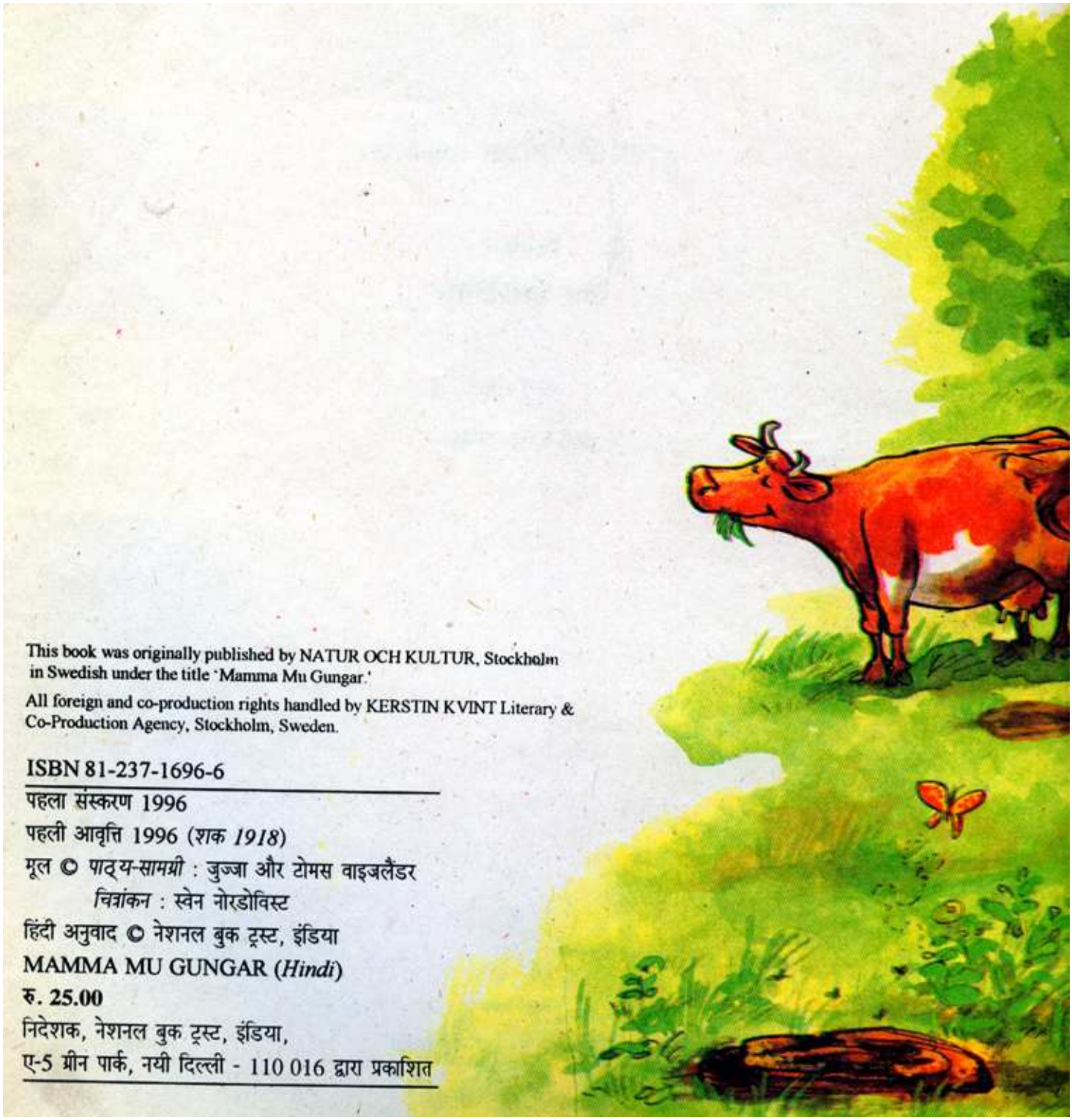

This book was originally published by NATUR OCH KULTUR, Stockholm in Swedish under the title 'Mamma Mu Gungar.'

All foreign and co-production rights handled by KERSTIN KVINT Literary & Co-Production Agency, Stockholm, Sweden.

ISBN 81-237-1696-6

पहला संस्करण 1996

पहली आवृत्ति 1996 (*शक 1918*)

मूल © *पाठ्य-सामग्री* : जुज्जा और टोमस वाइजलैंडर

चित्रांकन : स्वेन नोरडोविस्ट

हिंदी अनुवाद © नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

MAMMA MU GUNGAR (*Hindi*)

रु. 25.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया,

ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली - 110 016 द्वारा प्रकाशित

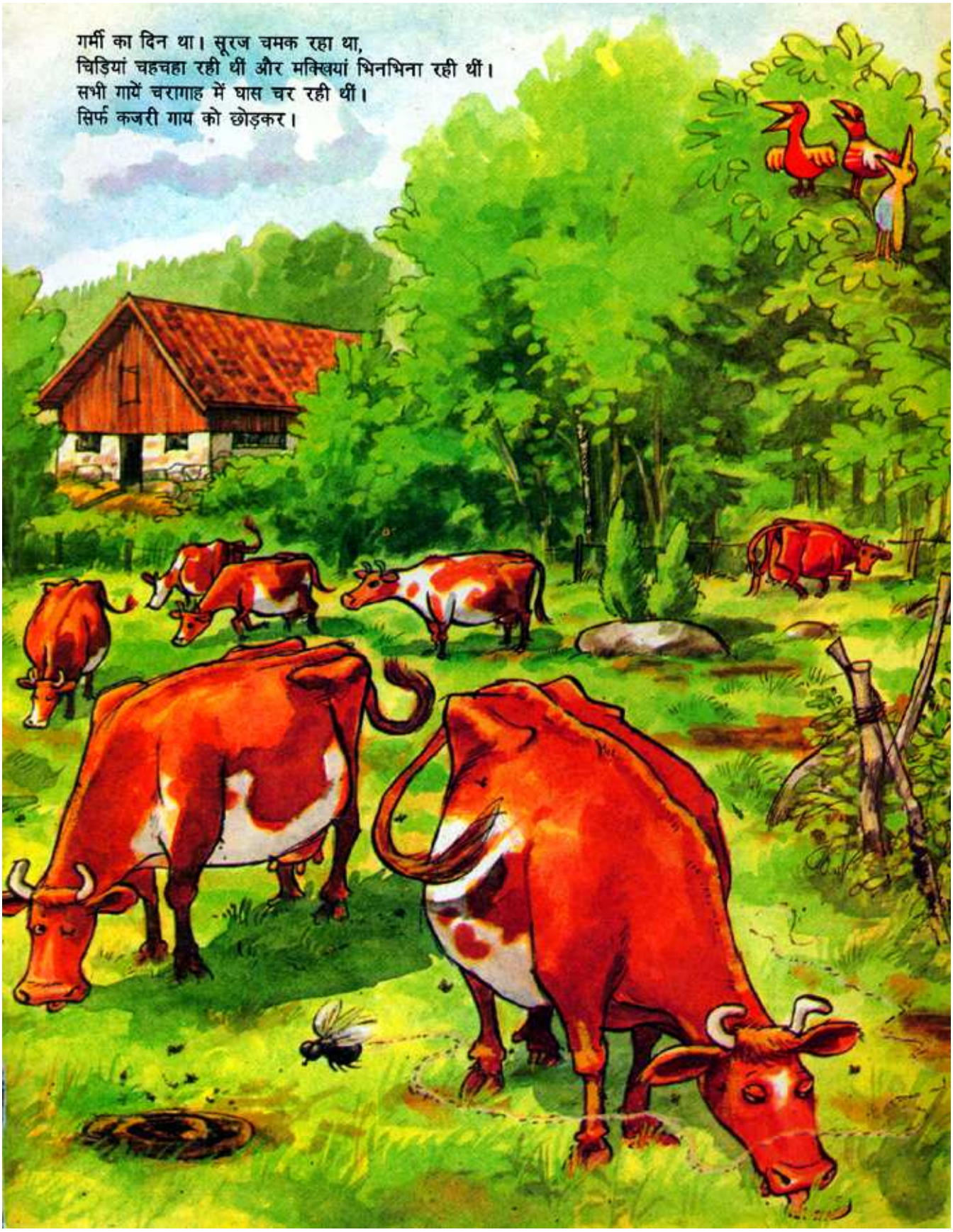
गर्मी का दिन था। सूरज चमक रहा था,
चिड़ियां चहचहा रही थीं और मक्खियां भिनभिना रही थीं।
सभी गायें चरागाह में घास चर रही थीं।
सिर्फ कजरी गाय को छोड़कर।

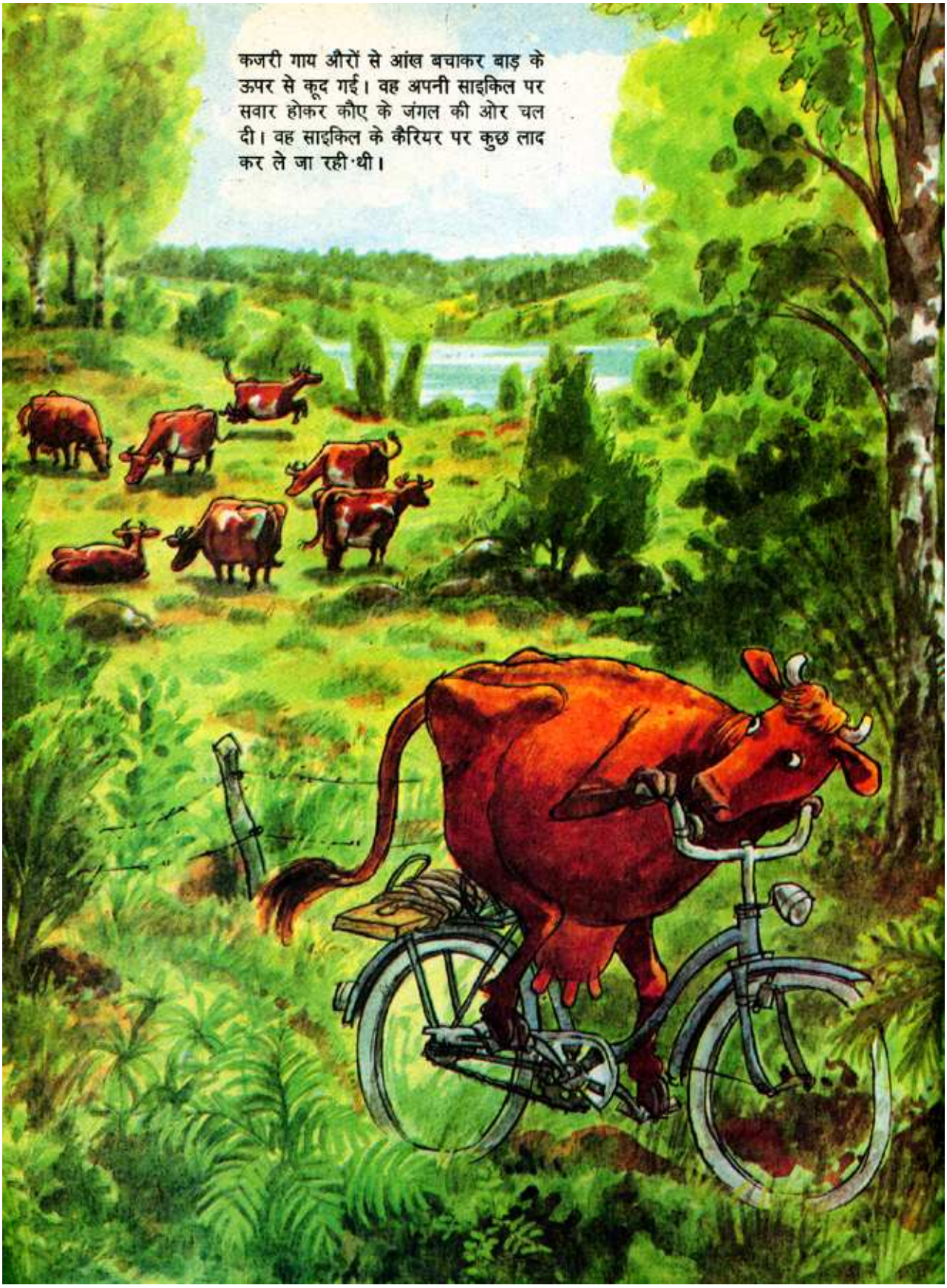

कजरी गाय औरों से आंख बचाकर बाड़ के ऊपर से कूद गई। वह अपनी साइकिल पर सवार होकर कौए के जंगल की ओर चल दी। वह साइकिल के कैरियर पर कुछ लाद कर ले जा रही थी।

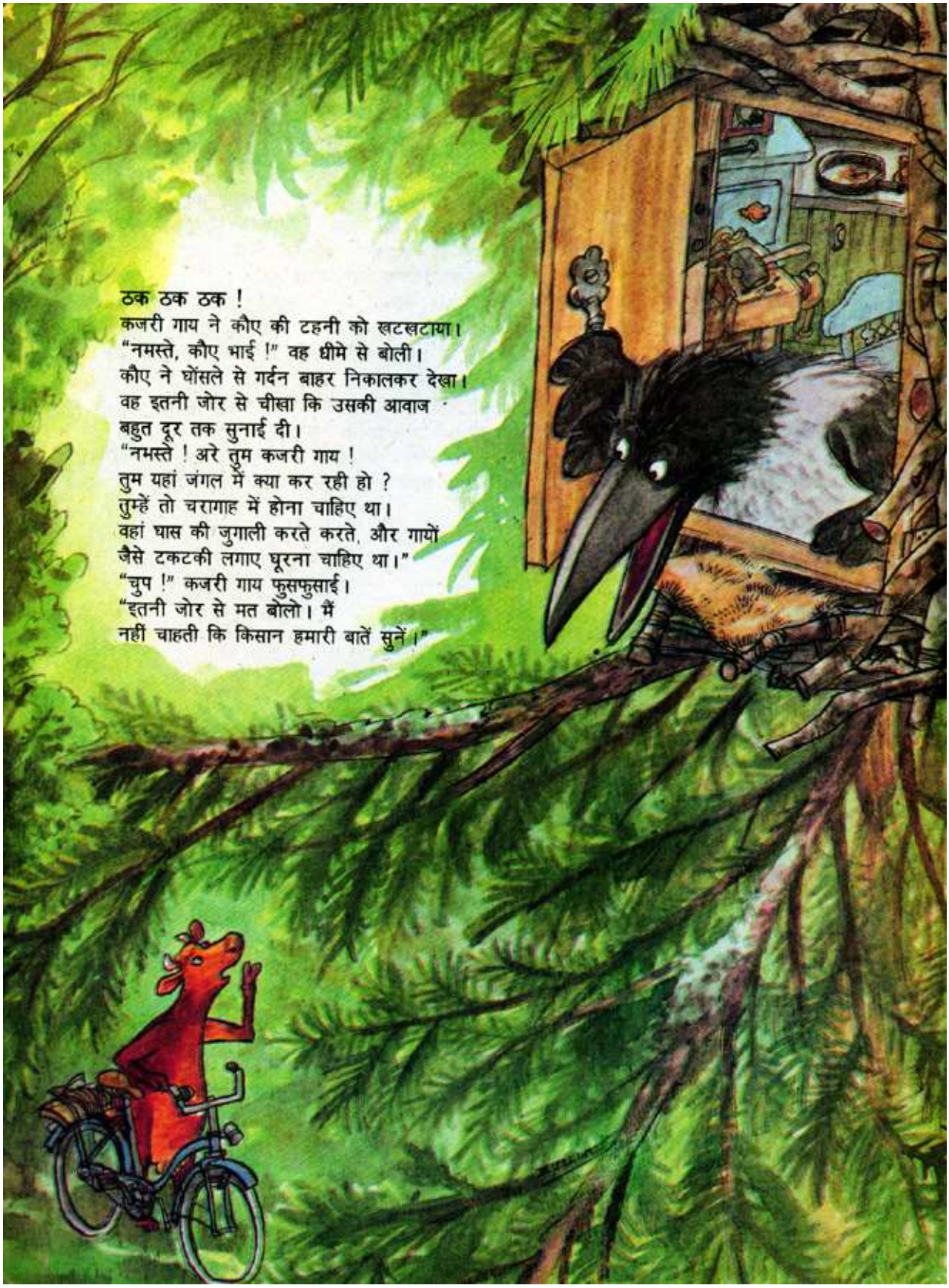
ठक ठक ठक !
कजरी गाय ने कौए की टहनी को खटखटाया।
"नमस्ते, कौए भाई !" वह धीमे से बोली।
कौए ने घोंसले से गर्दन बाहर निकालकर देखा।
वह इतनी जोर से चीखा कि उसकी आवाज
बहुत दूर तक सुनाई दी।
"नमस्ते ! अरे तुम कजरी गाय !
तुम यहां जंगल में क्या कर रही हो ?
तुम्हें तो चरागाह में होना चाहिए था।
वहां घास की जुगाली करते करते, और गायों
जैसे टकटकी लगाए घूरना चाहिए था।"
"चुप !" कजरी गाय फुसफुसाई।
"इतनी जोर से मत बोलो। मैं
नहीं चाहती कि किसान हमारी बातें सुनें।"

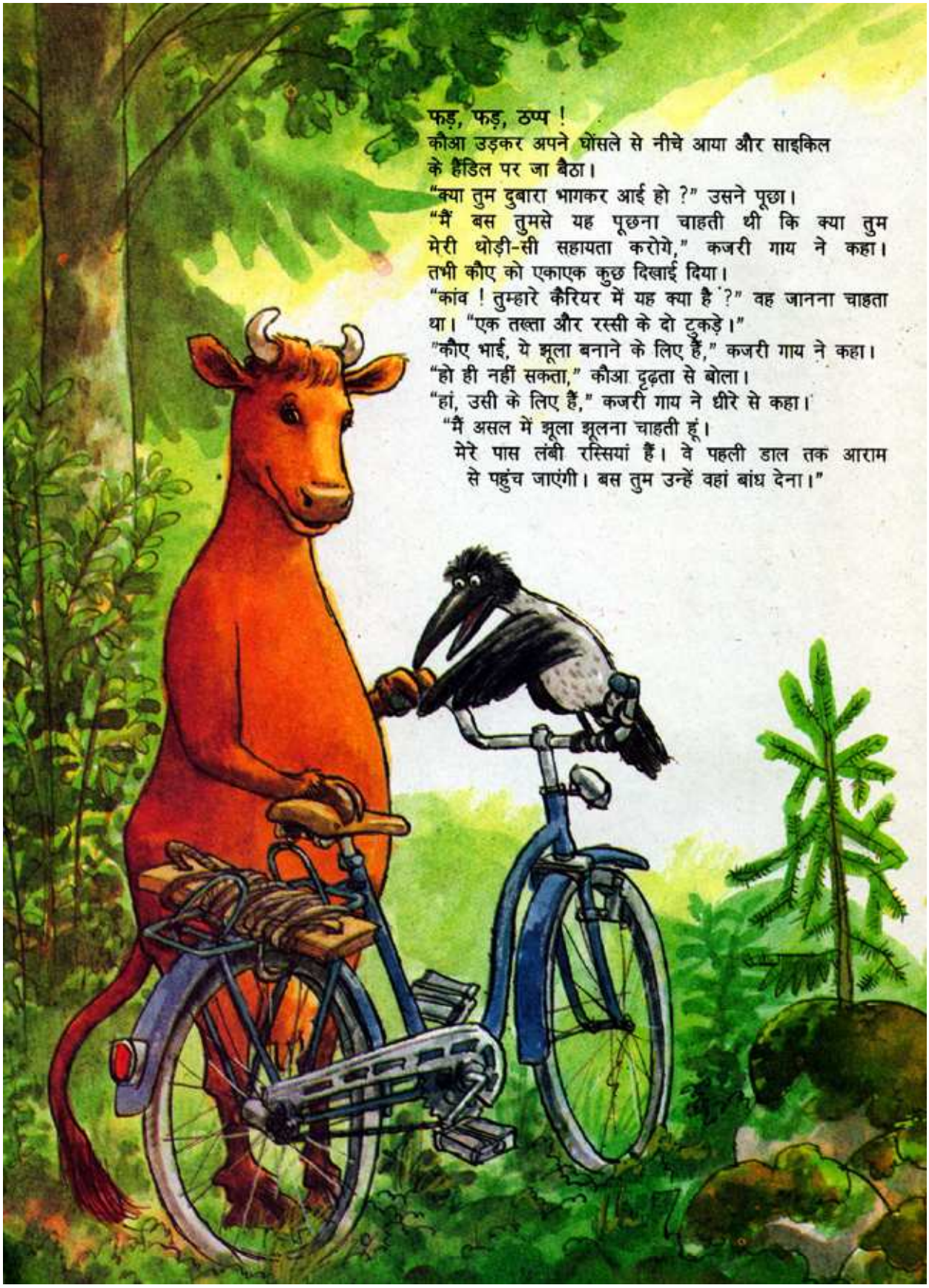

फड़, फड़, ठप्प !
कौआ उड़कर अपने घोंसले से नीचे आया और साइकिल के हैंडिल पर जा बैठा।
"क्या तुम दुबारा भागकर आई हो ?" उसने पूछा।
"मैं बस तुमसे यह पूछना चाहती थी कि क्या तुम मेरी थोड़ी-सी सहायता करोगे," कजरी गाय ने कहा।
तभी कौए को एकाएक कुछ दिखाई दिया।
"कांव ! तुम्हारे कैरियर में यह क्या है ?" वह जानना चाहता था। "एक तख्ता और रस्सी के दो टुकड़े।"
"कौए भाई, ये झूला बनाने के लिए हैं," कजरी गाय ने कहा।
"हो ही नहीं सकता," कौआ दृढ़ता से बोला।
"हां, उसी के लिए हैं," कजरी गाय ने धीरे से कहा।
"मैं असल में झूला झूलना चाहती हूं।
मेरे पास लंबी रस्सियां हैं। वे पहली डाल तक आराम से पहुंच जाएंगी। बस तुम उन्हें वहां बांध देना।"

"मैं !" वह चिल्लाया। "बांधूं। मेरी बला से !"
कौआ हैंडिल से उड़ा।
वह कजरी गाय के सिर के चारों ओर जितनी तेजी से हो सकता था उड़ा।
"मैं एक गाय के लिए झूला नहीं बांधने वाला।"
"पर मैं खुद तो बांध नहीं सकती," कजरी गाय ने मधुर आवाज में कहा। "परंतु तुम्हारे पंख तो हाथों की तरह हैं। देखो, मैं तो पहली डाल तक पहुंच ही नहीं सकती, पर तुम तो आराम से उड़कर पहुंच सकते हो।"

कौआ उड़ा और सीधा गाय की नाक के सामने वाली डाल पर जा बैठा।
"कजरी गाय, तुम एक गाय हो," उसने कहा। थोड़ी अलग तरह की गाय जरूर हो, पर फिर भी हो तो गाय ही। गायें कभी झूला नहीं झूलतीं।"
"यही तो बात है," कजरी गाय ने कहा। "कितने दुख की बात है कि बेचारी गायों को कभी झूला झूलने का अवसर ही नहीं मिलता।"
"बड़े दुख की बात है," कौए ने कांव-कांव करते हुए कहा। "गायें चरागाह में घास चरती हैं, फिर बैठकर जुगाली करती हैं और चीजों को घूरती हैं। उसके बाद वे दूध देने के लिए अंदर जाती हैं। वे अपने हाल से बहुत संतुष्ट दिखाई देती हैं।"
"क्या तुम इस हाल से संतुष्ट होते," कजरी गाय ने पूछा।
"नहीं, कभी नहीं।" कौआ चिल्लाया, "मैं तो कौआ हूं।"
"मैं भी अपने इस हाल से संतुष्ट नहीं हूं," कजरी गाय ने कहा।
"तुम्हारे कहने से कुछ नहीं होगा," कौए ने कहा।
"मैं यह काम नहीं करूंगा। इसके बारे में अब बात करना बेकार है।"

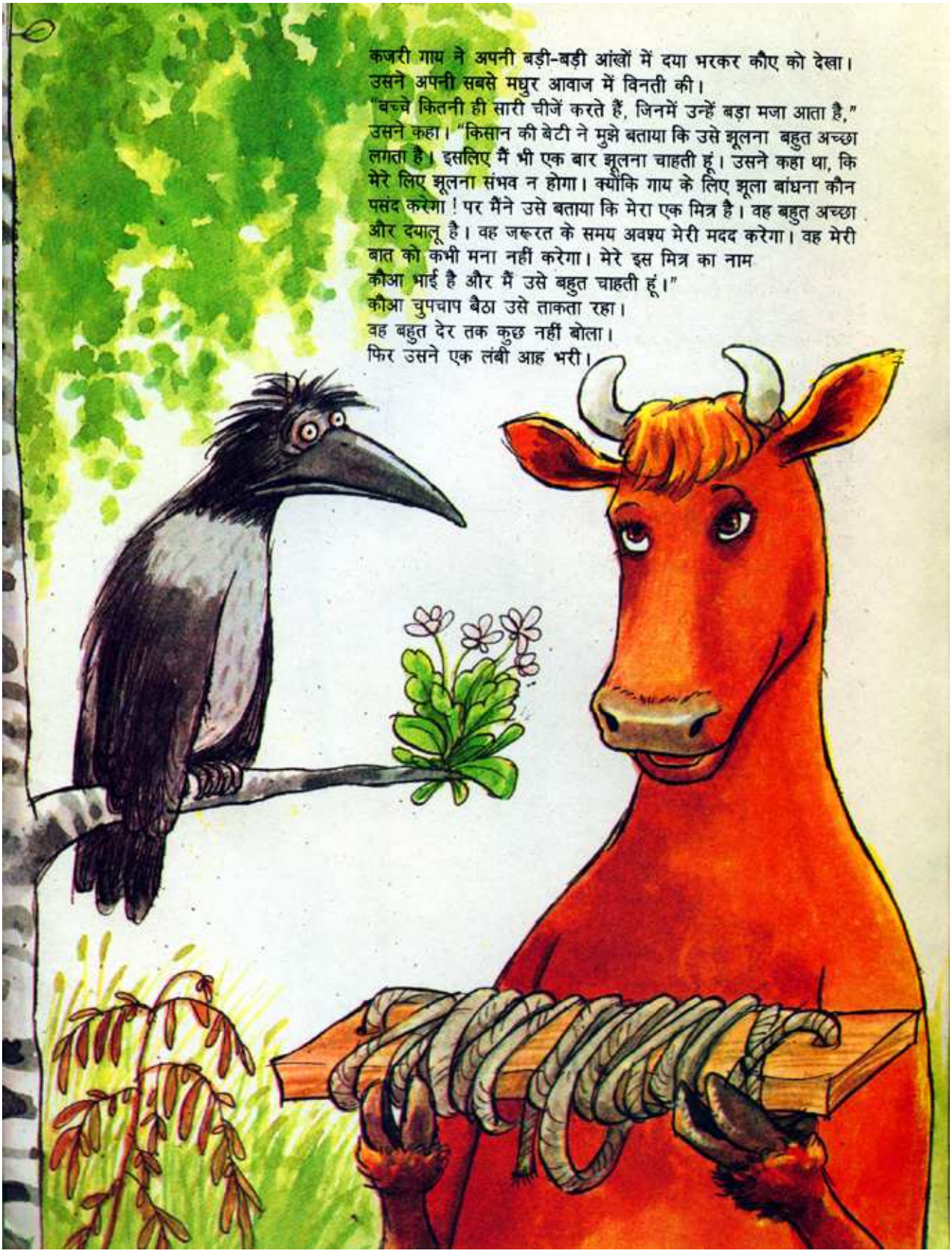

कजरी गाय ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों में दया भरकर कौए को देखा। उसने अपनी सबसे मधुर आवाज में विनती की।

"बच्चे कितनी ही सारी चीजें करते हैं, जिनमें उन्हें बड़ा मजा आता है," उसने कहा। "किसान की बेटी ने मुझे बताया कि उसे झूलना बहुत अच्छा लगता है। इसलिए मैं भी एक बार झूलना चाहती हूं। उसने कहा था, कि मेरे लिए झूलना संभव न होगा। क्योंकि गाय के लिए झूला बांधना कौन पसंद करेगा ! पर मैंने उसे बताया कि मेरा एक मित्र है। वह बहुत अच्छा और दयालू है। वह जरूरत के समय अवश्य मेरी मदद करेगा। वह मेरी बात को कभी मना नहीं करेगा। मेरे इस मित्र का नाम कौआ भाई है और मैं उसे बहुत चाहती हूं।"

कौआ चुपचाप बैठा उसे ताकता रहा।

वह बहुत देर तक कुछ नहीं बोला।

फिर उसने एक लंबी आह भरी।

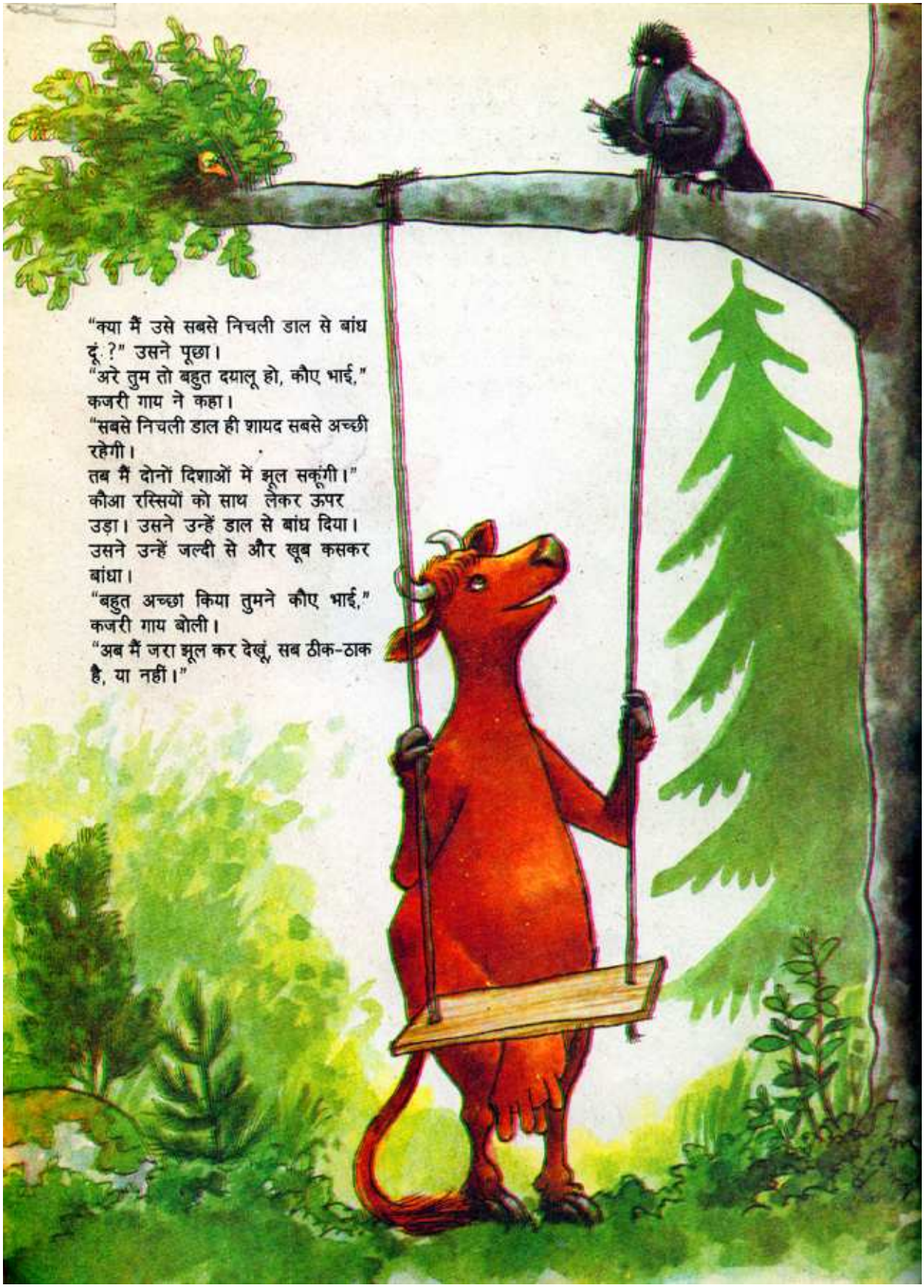

"क्या मैं उसे सबसे निचली डाल से बांध दूं ?" उसने पूछा।
"अरे तुम तो बहुत दयालू हो, कौए भाई," कजरी गाय ने कहा।
"सबसे निचली डाल ही शायद सबसे अच्छी रहेगी।
तब मैं दोनों दिशाओं में झूल सकूंगी।"
कौआ रस्सियों को साथ लेकर ऊपर उड़ा। उसने उन्हें डाल से बांध दिया। उसने उन्हें जल्दी से और खूब कसकर बांधा।
"बहुत अच्छा किया तुमने कौए भाई," कजरी गाय बोली।
"अब मैं जरा झूल कर देखूं, सब ठीक-ठाक है, या नहीं।"

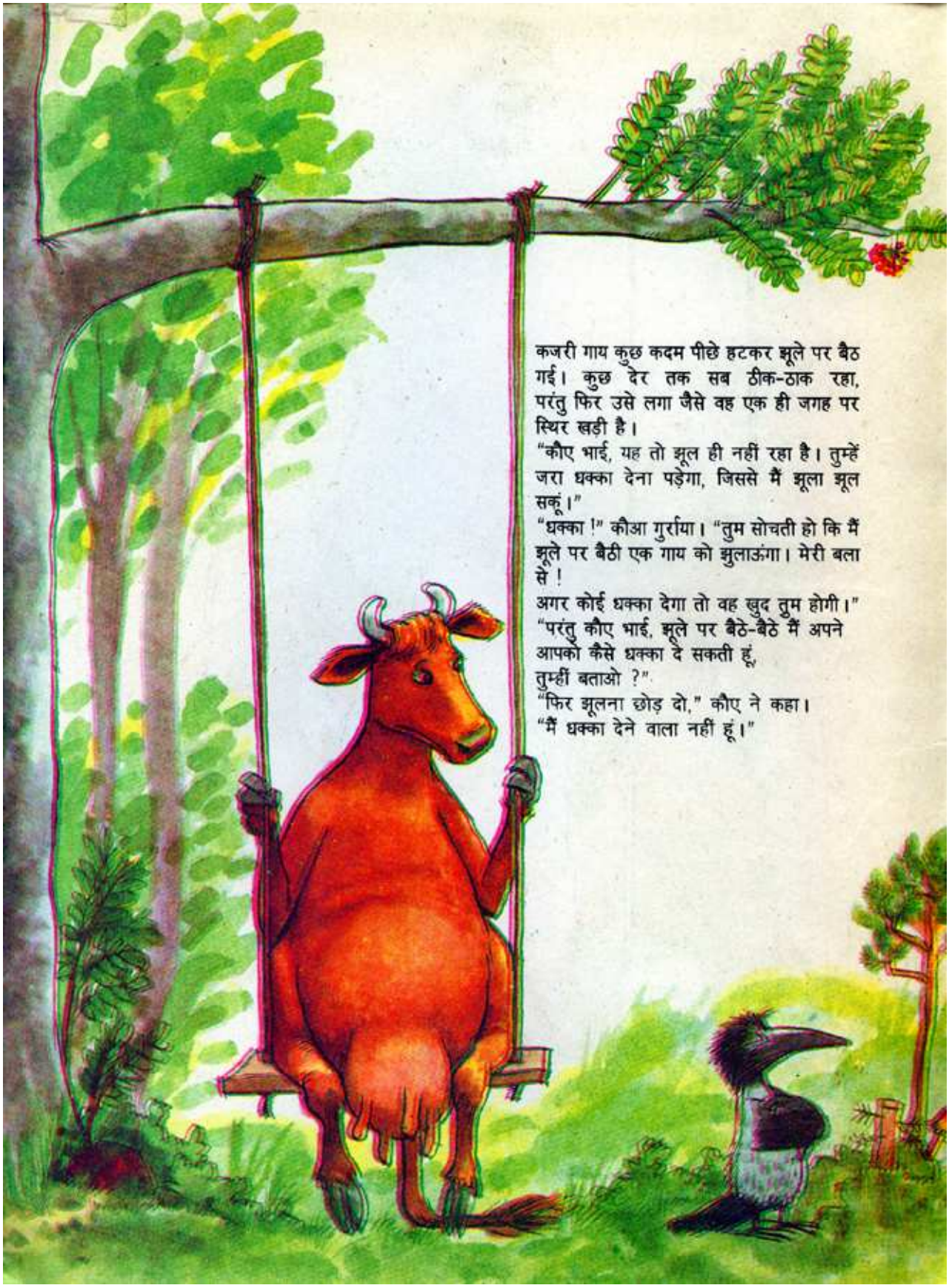

कजरी गाय कुछ कदम पीछे हटकर झूले पर बैठ गई। कुछ देर तक सब ठीक-ठाक रहा, परंतु फिर उसे लगा जैसे वह एक ही जगह पर स्थिर खड़ी है।

"कौए भाई, यह तो झूल ही नहीं रहा है। तुम्हें जरा धक्का देना पड़ेगा, जिससे मैं झूला झूल सकूं।"

"धक्का !" कौआ गुर्राया। "तुम सोचती हो कि मैं झूले पर बैठी एक गाय को झुलाऊंगा। मेरी बला से !

अगर कोई धक्का देगा तो वह खुद तुम होगी।"

"परंतु कौए भाई, झूले पर बैठे-बैठे मैं अपने आपको कैसे धक्का दे सकती हूं, तुम्हीं बताओ ?"

"फिर झूलना छोड़ दो," कौए ने कहा। "मैं धक्का देने वाला नहीं हूं।"

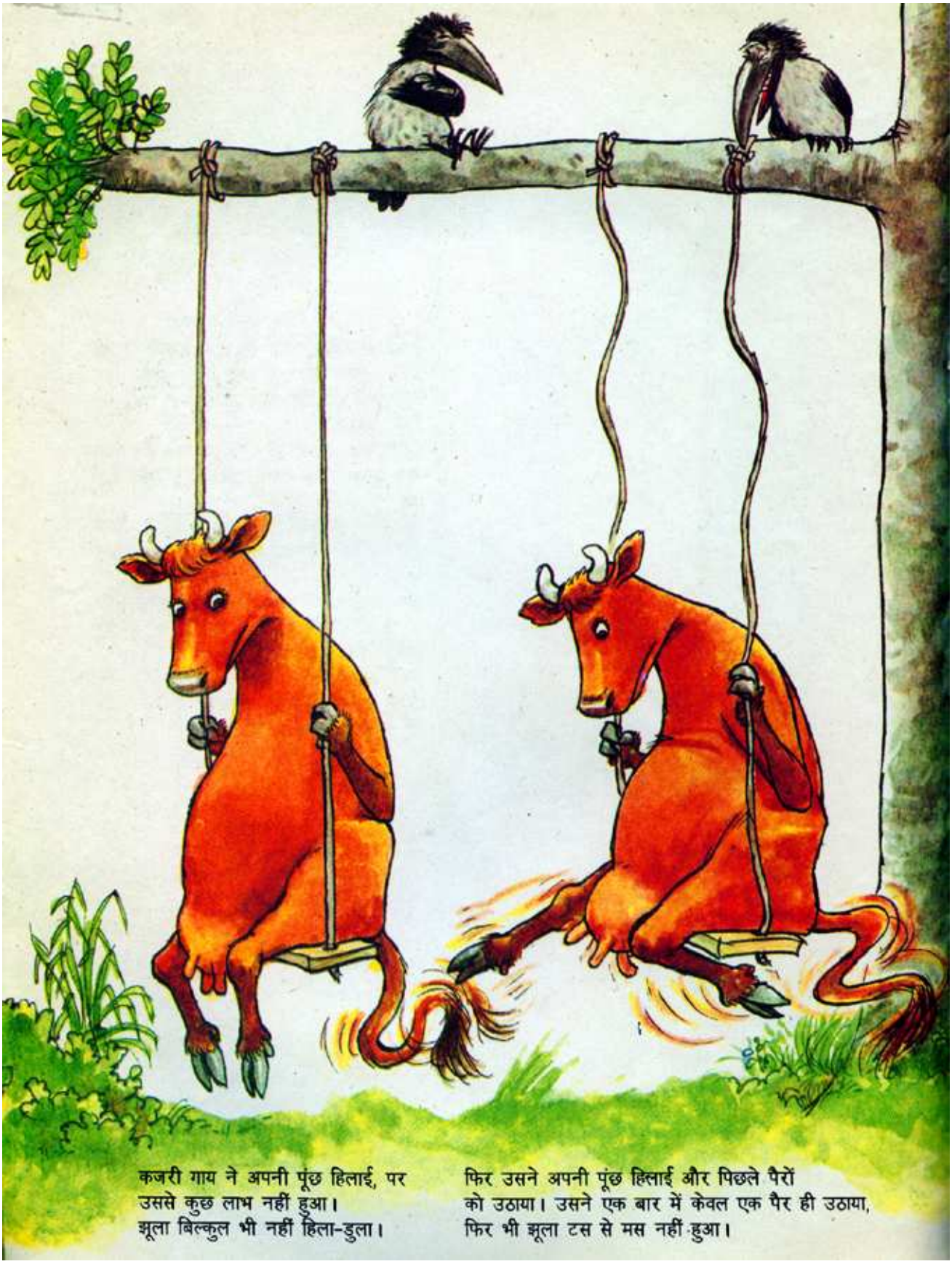

कजरी गाय ने अपनी पूंछ हिलाई, पर
उससे कुछ लाभ नहीं हुआ।
झूला बिल्कुल भी नहीं हिला-डुला।

फिर उसने अपनी पूंछ हिलाई और पिछले पैरों
को उठाया। उसने एक बार में केवल एक पैर ही उठाया,
फिर भी झूला टस से मस नहीं हुआ।

फिर उसने अपनी पूंछ हिलाई
और पिछले और अगले पांव उठाए।
इससे उसका संतुलन बिगड़ गया और
वह एकदम गिरने को हो गई।

अंत में उसने अपने सींगों को झकझोरा, पूंछ को
हिलाया और दोनों पिछले पैरों को तानकर पीछे
की ओर झुकी और फिर बस....

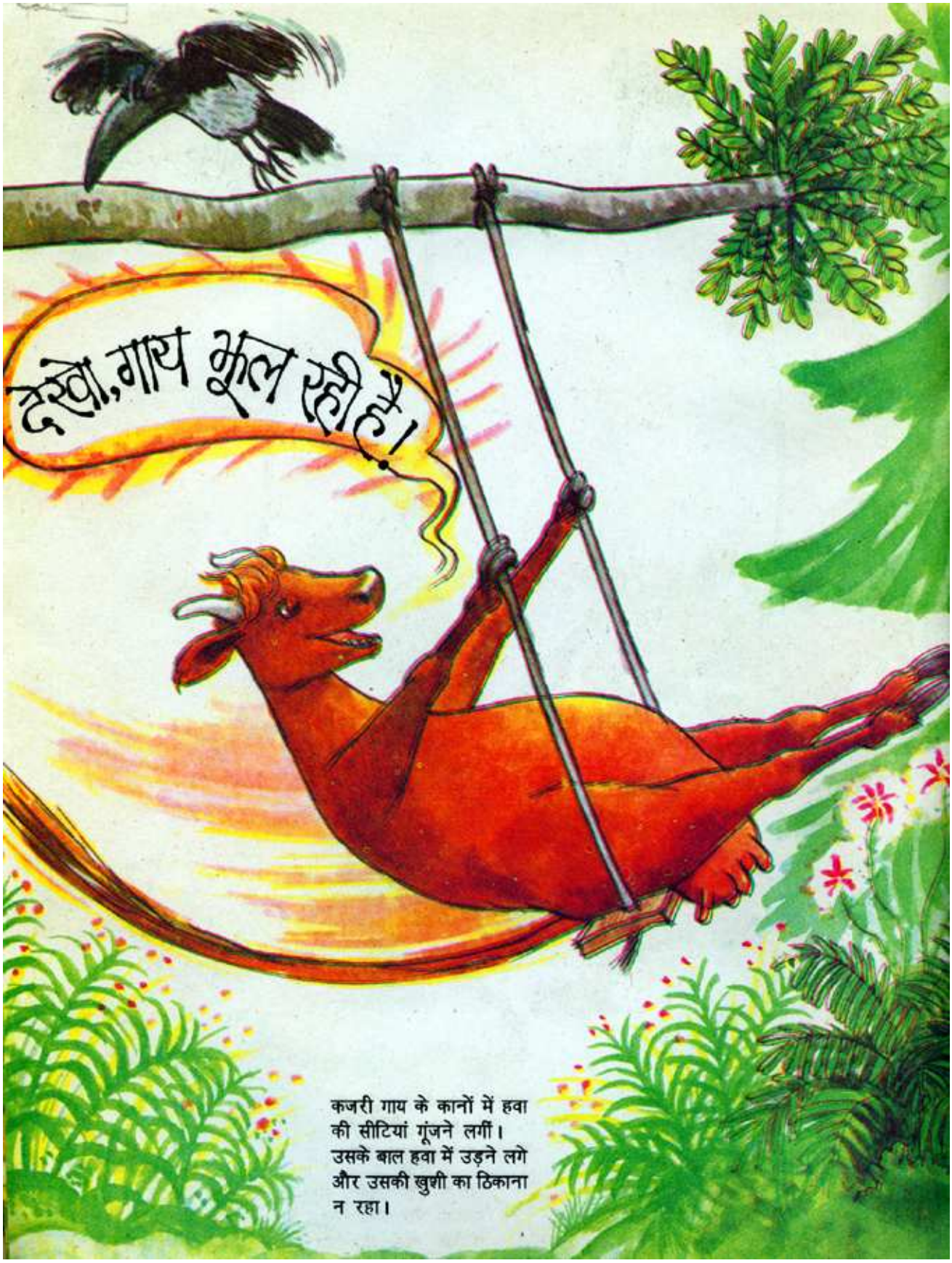

कजरी गाय के कानों में हवा की सीटियां गूंजने लगीं। उसके बाल हवा में उड़ने लगे और उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

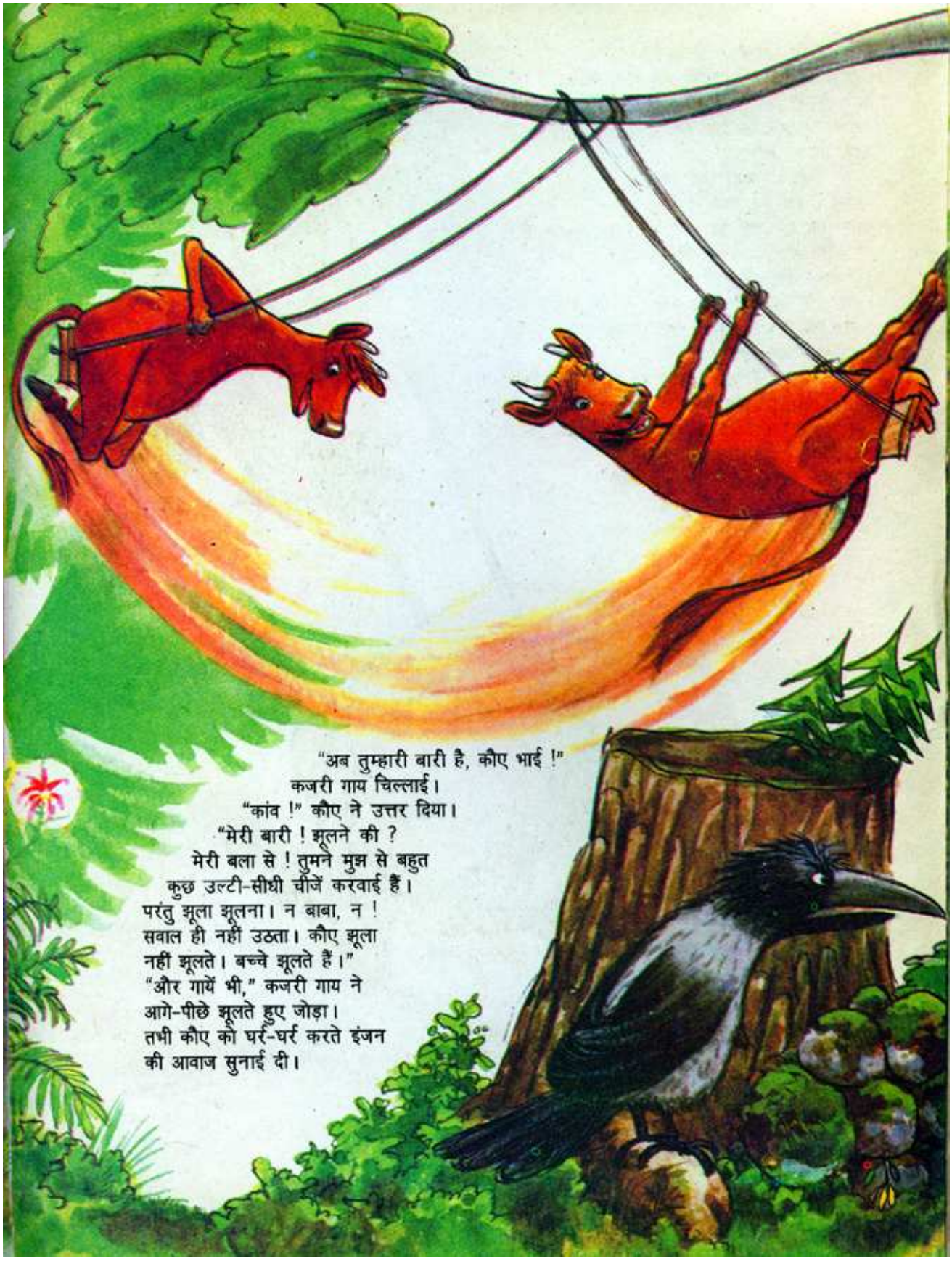

"अब तुम्हारी बारी है, कौए भाई !"
कजरी गाय चिल्लाई।
"कांव !" कौए ने उत्तर दिया।
"मेरी बारी ! झूलने की ?
मेरी बला से ! तुमने मुझ से बहुत
कुछ उल्टी-सीधी चीजें करवाई हैं।
परंतु झूला झूलना। न बाबा, न !
सवाल ही नहीं उठता। कौए झूला
नहीं झूलते। बच्चे झूलते हैं।"
"और गायें भी," कजरी गाय ने
आगे-पीछे झूलते हुए जोड़ा।
तभी कौए को घर्र-घर्र करते इंजन
की आवाज सुनाई दी।

"किसान आ रहा है !" कौआ चिल्लाया।
"झूला रोको ! जल्दी उतरो और छिप जाओ।
अगर उसने देखा कि उसकी एक गाय पेड़ से
लटके एक झूले पर झूल रही है तो उसे बहुत
गहरा झटका लगेगा !"
"झूला रोकूं ?" कजरी गाय बोली,
"परंतु मैं यह कैसे करूं ?"
उसने एक पैर आगे को ताना और दूसरा पीछे को।
वह पलट कर अपने पेट के बल लेटी,
परंतु झूला फिर भी नहीं रुका।
"कौए भाई, तुम मेरी मदद करो," उसने कहा।
"अगर तुम बीच में आकर खड़े हो जाओ तो
शायद झूला रुक जाए।"
"वाह ! मैं बीच में आकर खड़ा रहूं !" कौआ चिल्लाया।
"जिससे एक गाय मेरे सिर पर धड़ाम से गिरे। इससे मेरे
पंखों का सत्यानाश हो जायेगा ! तुम जरा ब्रेक लगाओ !"
कजरी गाय ने इधर-उधर देखा।
"मुझे नहीं लगता कि इस झूले में कहीं
पर भी ब्रेक हैं।" उसने कहा।

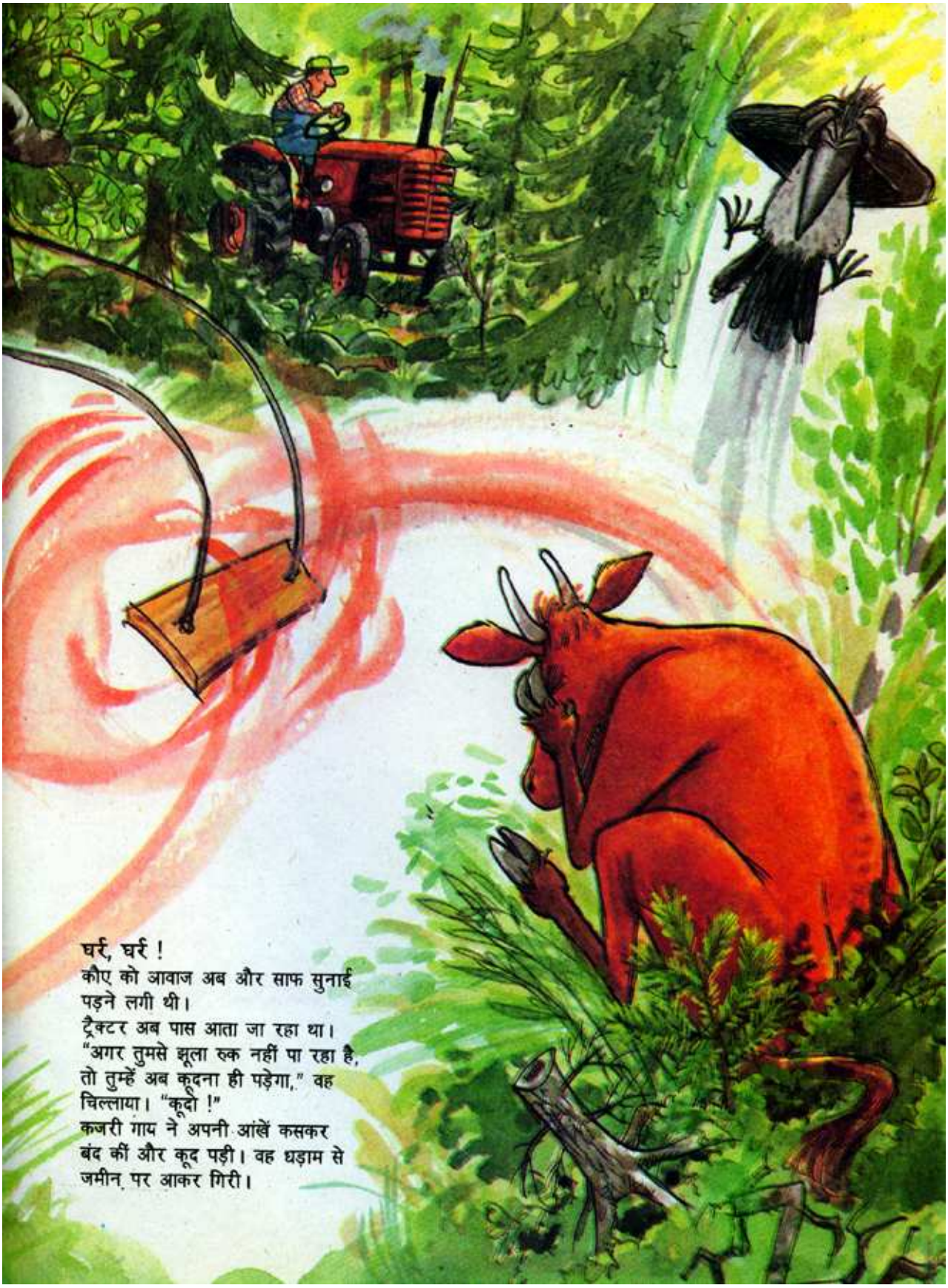

घर्र, घर्र !
कौए को आवाज अब और साफ सुनाई पड़ने लगी थी।
ट्रैक्टर अब पास आता जा रहा था।
"अगर तुमसे झूला रुक नहीं पा रहा है, तो तुम्हें अब कूदना ही पड़ेगा," वह चिल्लाया। "कूदो !"
कजरी गाय ने अपनी आंखें कसकर बंद कीं और कूद पड़ी। वह धड़ाम से जमीन पर आकर गिरी।

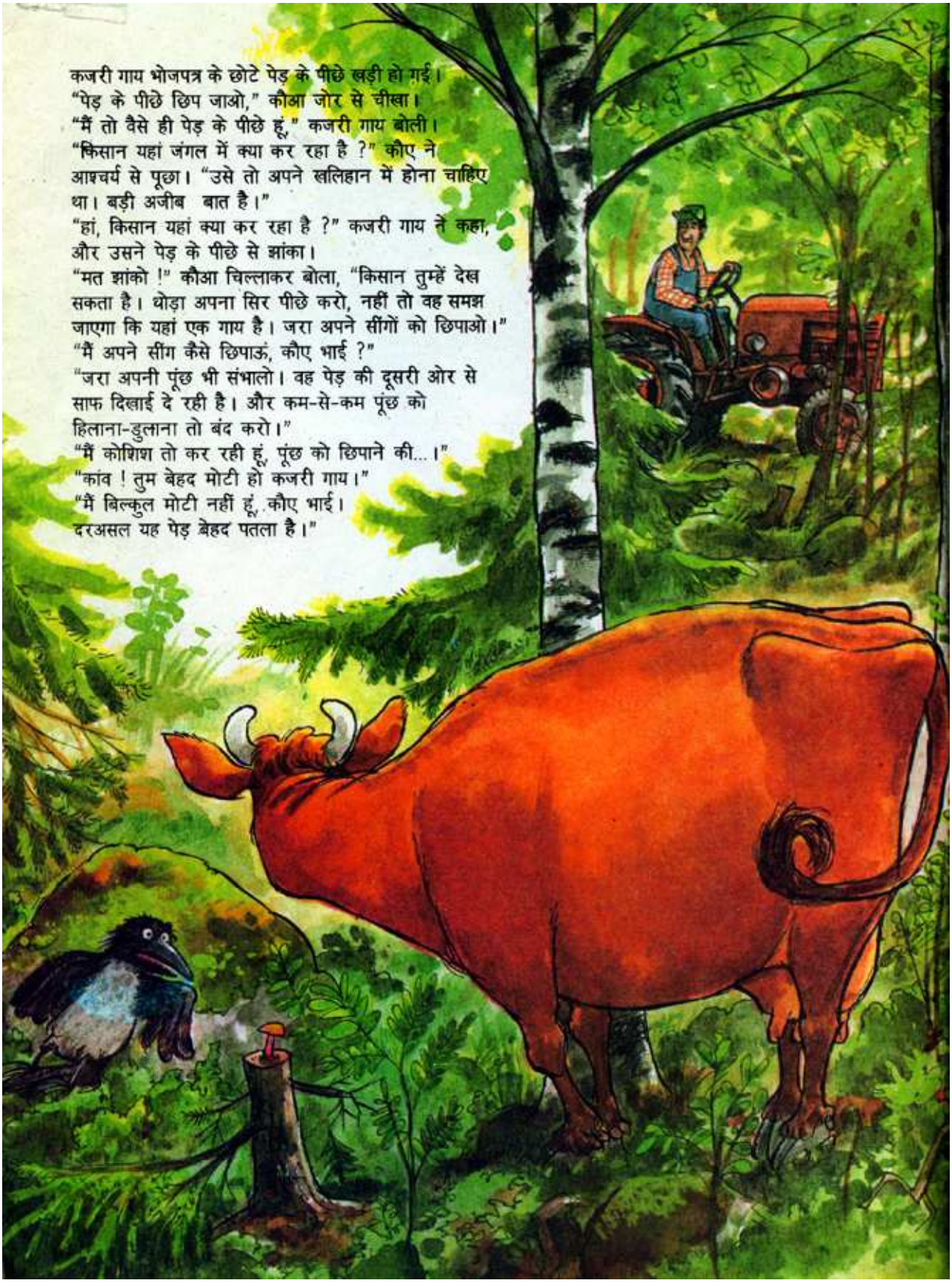

कजरी गाय भोजपत्र के छोटे पेड़ के पीछे खड़ी हो गई।
"पेड़ के पीछे छिप जाओ," कौआ जोर से चीखा।
"मैं तो वैसे ही पेड़ के पीछे हूं," कजरी गाय बोली।
"किसान यहां जंगल में क्या कर रहा है ?" कौए ने आश्चर्य से पूछा। "उसे तो अपने खलिहान में होना चाहिए था। बड़ी अजीब बात है।"
"हां, किसान यहां क्या कर रहा है ?" कजरी गाय ने कहा, और उसने पेड़ के पीछे से झांका।
"मत झांको !" कौआ चिल्लाकर बोला, "किसान तुम्हें देख सकता है। थोड़ा अपना सिर पीछे करो, नहीं तो वह समझ जाएगा कि यहां एक गाय है। जरा अपने सींगों को छिपाओ।"
"मैं अपने सींग कैसे छिपाऊं, कौए भाई ?"
"जरा अपनी पूंछ भी संभालो। वह पेड़ की दूसरी ओर से साफ दिखाई दे रही है। और कम-से-कम पूंछ को हिलाना-डुलाना तो बंद करो।"
"मैं कोशिश तो कर रही हूं, पूंछ को छिपाने की...।"
"कांव ! तुम बेहद मोटी हो कजरी गाय।"
"मैं बिल्कुल मोटी नहीं हूं, कौए भाई। दरअसल यह पेड़ बेहद पतला है।"

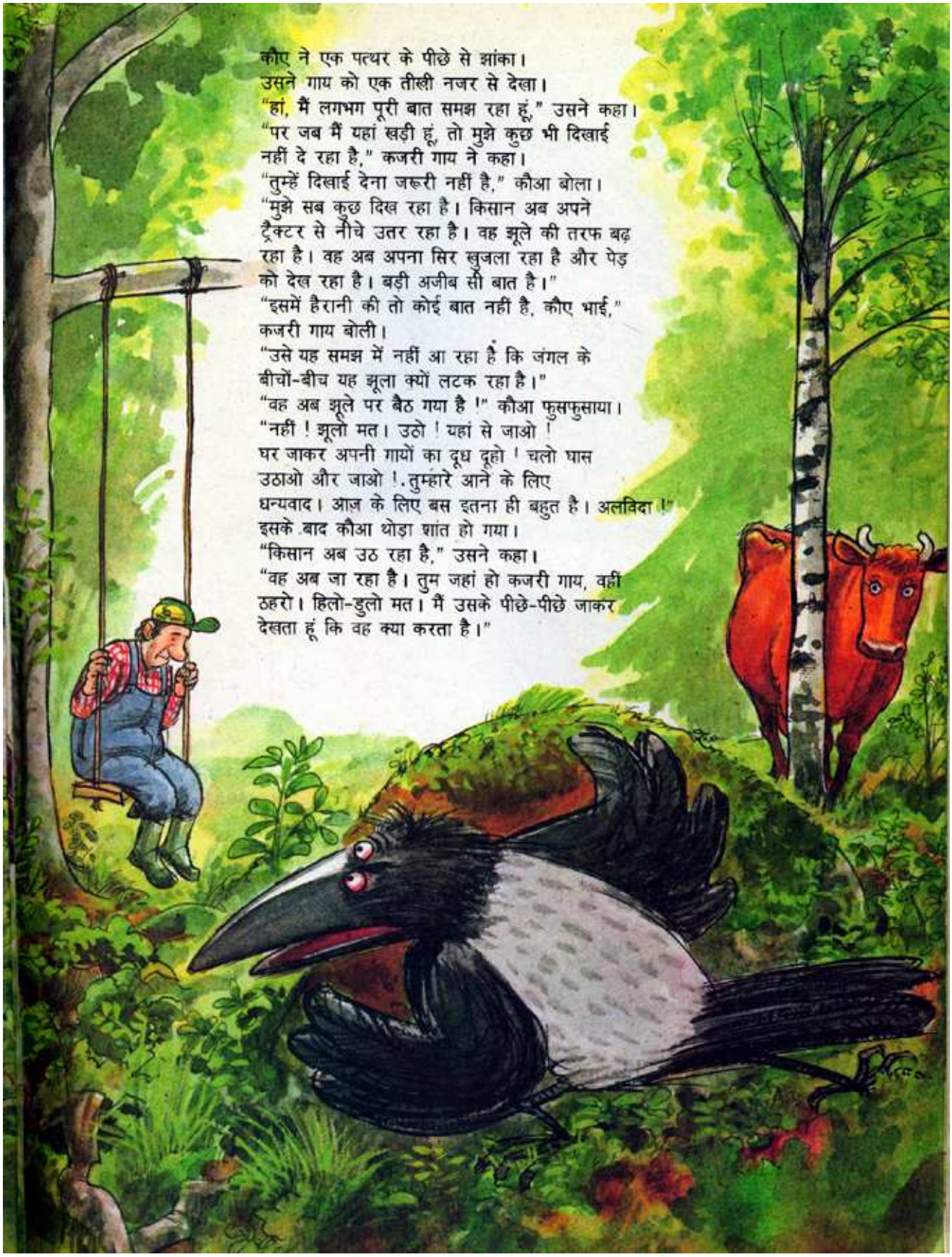

कौए ने एक पत्थर के पीछे से झांका।
उसने गाय को एक तीखी नजर से देखा।
"हां, मैं लगभग पूरी बात समझ रहा हूं," उसने कहा।
"पर जब मैं यहां खड़ी हूं, तो मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है," कजरी गाय ने कहा।
"तुम्हें दिखाई देना जरूरी नहीं है," कौआ बोला।
"मुझे सब कुछ दिख रहा है। किसान अब अपने ट्रैक्टर से नीचे उतर रहा है। वह झूले की तरफ बढ़ रहा है। वह अब अपना सिर खुजला रहा है और पेड़ को देख रहा है। बड़ी अजीब सी बात है।"
"इसमें हैरानी की तो कोई बात नहीं है, कौए भाई," कजरी गाय बोली।
"उसे यह समझ में नहीं आ रहा है कि जंगल के बीचों-बीच यह झूला क्यों लटक रहा है।"
"वह अब झूले पर बैठ गया है !" कौआ फुसफुसाया।
"नहीं ! झूलो मत। उठो ! यहां से जाओ ! घर जाकर अपनी गायों का दूध दूहो ! चलो घास उठाओ और जाओ !. तुम्हारे आने के लिए धन्यवाद। आज के लिए बस इतना ही बहुत है। अलविदा !"
इसके बाद कौआ थोड़ा शांत हो गया।
"किसान अब उठ रहा है," उसने कहा।
"वह अब जा रहा है। तुम जहां हो कजरी गाय, वहीं ठहरो। हिलो-डुलो मत। मैं उसके पीछे-पीछे जाकर देखता हूं कि वह क्या करता है।"

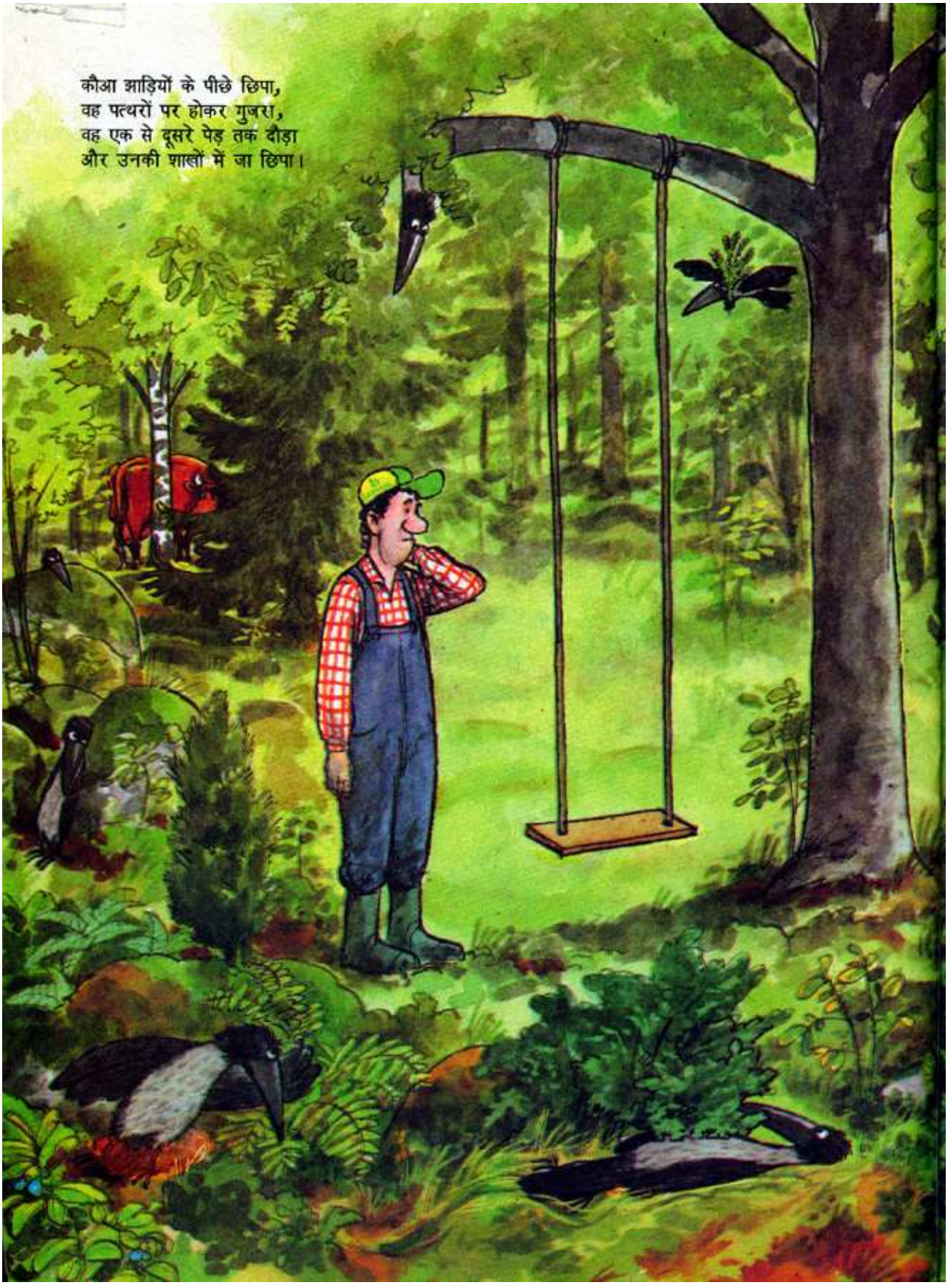
कौआ झाड़ियों के पीछे छिपा,
वह पत्थरों पर होकर गुजरा,
वह एक से दूसरे पेड़ तक दौड़ा
और उनकी शाखों में जा छिपा।

किसान का ध्यान उस ओर नहीं गया।
उसने बस अपना सिर हिलाया।

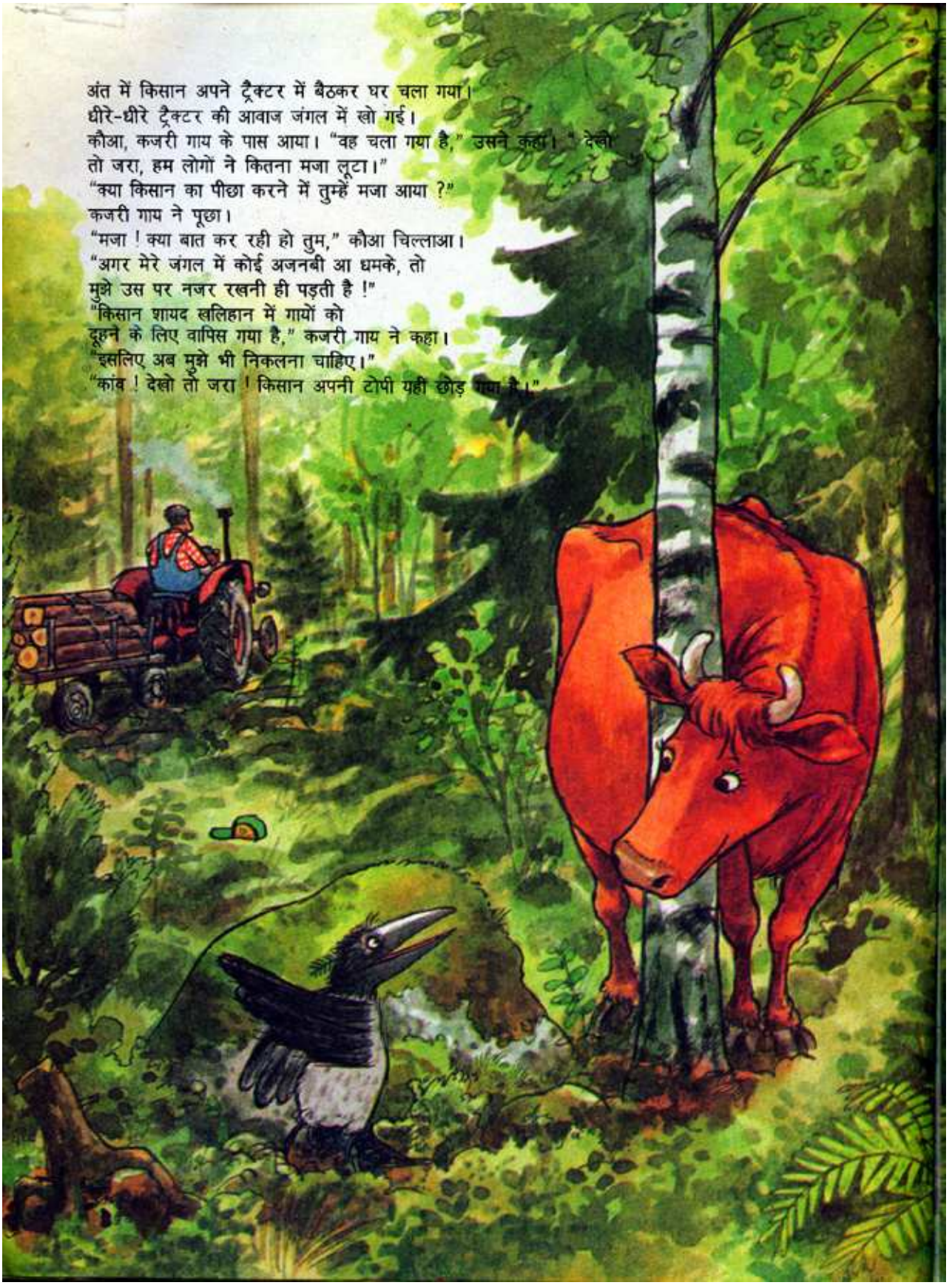
अंत में किसान अपने ट्रैक्टर में बैठकर घर चला गया।
धीरे-धीरे ट्रैक्टर की आवाज जंगल में खो गई।
कौआ, कजरी गाय के पास आया। "वह चला गया है," उसने कहा। "देखो तो जरा, हम लोगों ने कितना मजा लूटा।"
"क्या किसान का पीछा करने में तुम्हें मजा आया ?" कजरी गाय ने पूछा।
"मजा ! क्या बात कर रही हो तुम," कौआ चिल्लाआ। "अगर मेरे जंगल में कोई अजनबी आ धमके, तो मुझे उस पर नजर रखनी ही पड़ती है !"
"किसान शायद खलिहान में गायों को दूहने के लिए वापिस गया है," कजरी गाय ने कहा। "इसलिए अब मुझे भी निकलना चाहिए।"
"कांव ! देखो तो जरा ! किसान अपनी टोपी यहीं छोड़ गया है।"

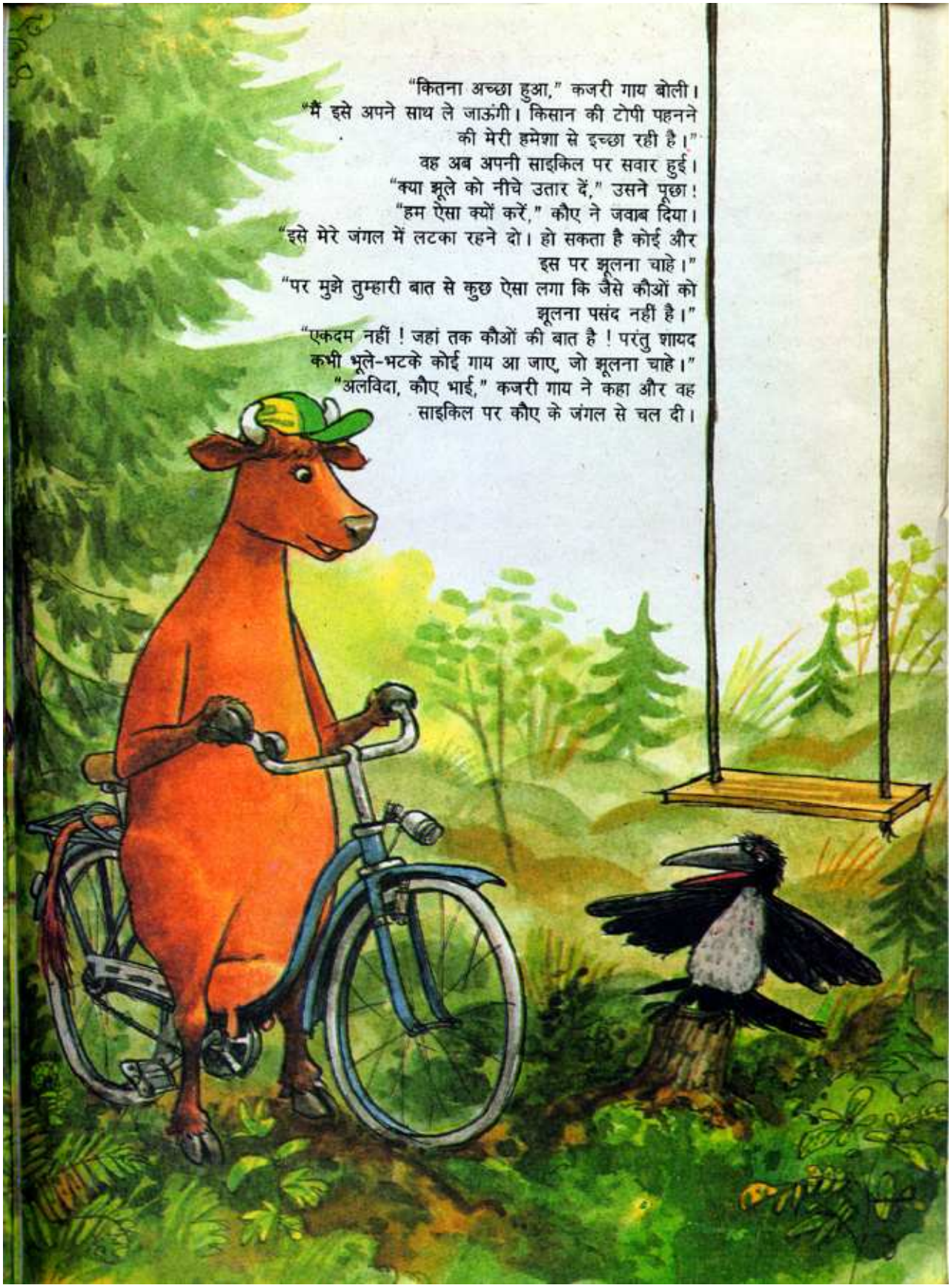

"कितना अच्छा हुआ," कजरी गाय बोली। "मैं इसे अपने साथ ले जाऊंगी। किसान की टोपी पहनने की मेरी हमेशा से इच्छा रही है।"

वह अब अपनी साइकिल पर सवार हुई।

"क्या झूले को नीचे उतार दें," उसने पूछा!

"हम ऐसा क्यों करें," कौए ने जवाब दिया। "इसे मेरे जंगल में लटका रहने दो। हो सकता है कोई और इस पर झूलना चाहे।"

"पर मुझे तुम्हारी बात से कुछ ऐसा लगा कि जैसे कौओं को झूलना पसंद नहीं है।"

"एकदम नहीं ! जहां तक कौओं की बात है ! परंतु शायद कभी भूले-भटके कोई गाय आ जाए, जो झूलना चाहे।"

"अलविदा, कौए भाई," कजरी गाय ने कहा और वह साइकिल पर कौए के जंगल से चल दी।

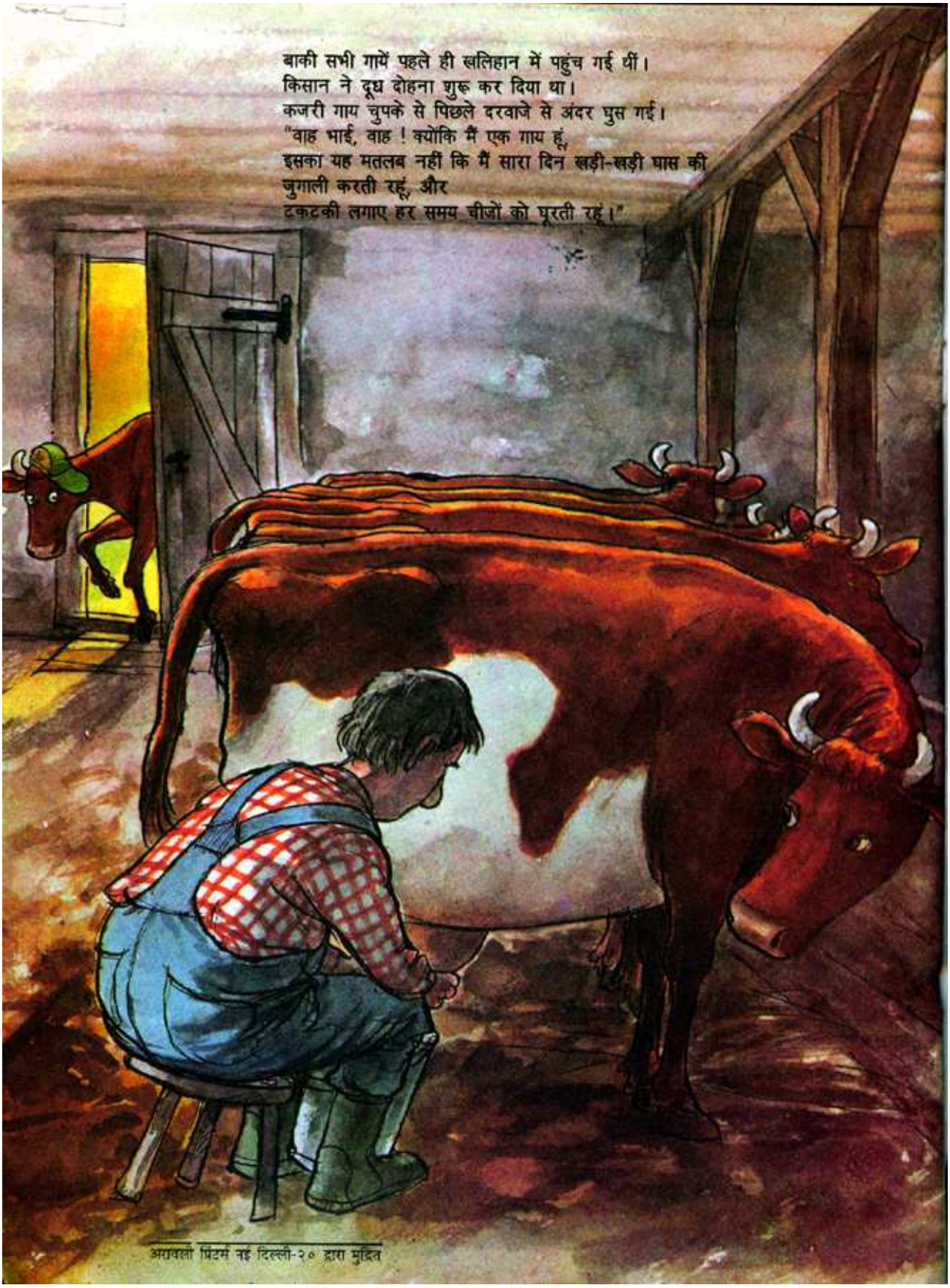

अग्रवाल प्रिंटर्स नई दिल्ली-२० द्वारा मुद्रित